[illegible]

(४)

(१)

वैदिक विद्या शिक्षाकी (शिलेबस) अवस्थापत्रकाकी

कला
यह, तीसरी ~~रूप~~ है, इसमें ३२ कलमे हैं, छात्र २।८५६- २२८५८।

निवेदन और स्थान

(१) ~~ऋग्वेदसंहिता-~~

(१) ऋग्वेदसंहिता — "अग्निमीळे पुरोहितम्" इस मन्त्रसे इसका प्रारम्भ हुआ है, इसका संग्रह शाकल ऋषिने किया है, अतः इसका नाम "शाकलसंहिता" पडा है, इसमें दस मण्डल हैं, शतर्चिमंडल. (१) गृत्समद. (२) (३) विश्वामित्र, (४) ~~[illegible]~~ वामदेव, (५) अत्रि, (६) भरद्वाज, (७) वसिष्ठ, (८) प्रगाथ, (९) पवमान, (१०) क्षुद्रसूक्त महासूक्त" इनमें (९) नवममण्डल एकही पवमान देवता नामसे प्रसिद्ध हैं, और मौक्तमण्डल ऋषियोंके नामसे प्रसिद्ध हैं; यह मण्डलक्रमही पुराना है (मंडल. अनुवाक. सूक्त ऋक्) "बाष्कल संहिता" इसमें इसमें ~~अध्याय~~ (८) अष्टक (६४) अध्याय, वर्ग और मन्त्र ऐसे हैं विभाग है, इसमें आठ अष्टक हैं, हर एक अष्टकमें, आठ अध्याय हैं. ऐसे ६४ अध्याय हैं, वर्ग और मन्त्र अनियत हैं, उसकी संख्या, कम ज्यादा है,

(एक यजुर्वेद भी है)

यजु
(१) ~~ऋग्वेदसंहिता-~~

(२) यजुर्वेद संहिता- इसमें कृष्ण और शुक्ल ऐसे दो विभाग है, और तिसरा मूल.
(१) कृष्णयजुर्वेदसंहिता. यह सारस्वतपाठ से प्रचलित है जो कि अभी अध्ययनमें है. इसका प्रारम्भ "इषे त्वोर्जे त्वा" इस मन्त्रसे हुआ है, इसमें सातकाण्ड हैं; इनको कोई कोई लोग अष्टक भी कहते हैं,
यह संहिता मन्त्र और ब्राह्मणसे मिश्रित है, ब्राह्मणभागमें भी स्वर है,
इस कृष्णयजुर्वेदमें मैत्रायणी और काठक, तथा कपिष्ठलकठ ऐसी तीन संहिताएं हैं, उनमें काठक संहिताके मंत्रोंमें केवल अनुदात्तस्वरही है, सभी मंत्र अनुदात्तस्वरसेंही पढनेमें आते है, ये तीनो शाखाओंकी पढाई अभी प्रचलित नही है,
इनमें मैत्रायणीसंहिता और कठसंहिता" ये दोमात्र ही सातवळेकरके स्वाध्यायमंडलने छपाया गया है, "कपिष्ठलकठसंहिता" जर्मनीमें छपी है,

(३) २ (मूलयजुर्वेदसंहिता काण्डक्रमः)

(३) मूलयजुर्वेदसंहिता- यह बौधायन-आपस्तम्ब हिरण्यकेशीय-काण्डानुक्रमणिका सूत्रके अनुसार काण्डविभागक्रमसे युक्त है, इसमें- "प्राजापत्य, सौम्य, आग्नेय, वैश्वदेव, और स्वायम्भुव "ऐसे पांच काण्ड हैं; यह भी इषे त्वोर्जे त्वा इस मंत्रसेही आरब्ध है, इसकी पढाई अभी प्रचलित नही है यही शुक्ल और कृष्णयजुर्वेदसे पहलेका है, इसका उल्लेख- स्वाध्यायमण्डलमें छपी हुई तैत्तिरीयसंहिताके प्रारम्भमें भूमिकाके रूपसे दी गई है. उसका नाम है- वेदवेदिका"।
उसमें बौधायनादि सूत्रोंके काण्डानुक्रमणिकाके अनुसार पांच काण्डोंका विभाग और उसका विवरण भी बताया गया है, उसकी मूलयजुर्वेदसंहिता ~~का~~ के संशोधनसे देवरातजीने पूरी संहिता लिखी है. वह अभीतक छपी नही है,

(४) २ शुक्लयजुर्वेदसंहिता-

(४) शुक्लयजुर्वेदसंहिता,- इसका भी "इषे त्वोर्जे त्वा" इसी मंत्रसे प्रारम्भ हुआ है. इसमें "वाजसनेय-माध्यन्दिन, और काण्व" ऐसी तीन शाखाएँ प्रचलित है, इनमें ४० अध्याय हैं, वाजसनेय, माध्यन्दिन" इन दो शाखाओंमें मंत्रोंका पाठ ह्रस्वस्वरके साथही प्रचलित है. काण्वशाखामें ह्रस्वस्वरका पाठ नहीं है, वस्तुतः ऋग्वेदादि सभी वेदोंमें ह्रस्वस्वरका विधान, लेकिन वह प्रचलित नही है; कबसे नष्ट हुआ है इसका कोई पता नही है,

२

२ संहितापाठ में - १९ ९२ मन्त्र हैं

(ग) सामवेदसंहिता

(४) सामवेद संहिता - इसमें कौथुमी राणायनी और जैमिनी ऐसे अनेक शाखाएं हैं, लेकिन अभी कौथुमी राणायनी येदो शाखाएं ही प्रचलित हैं "इसका प्रारम्भ "अग्न आयाहि वीतये" इस ऋग् मन्त्रसे हुआ है ऋचाओंको ही गायनसे साम ऐसा नाम आया है,

अतः ऋग्वेदमें आये हुए १८०७ मंत्र इस सामवेदमें हैं, उनके अतिरिक्त ९९ मन्त्र अधिक हैं वे भी ऋग् मन्त्र ही माने गए हैं।

इसमें पूर्वार्चिक और उत्तरार्चिक ये दो विभाग हैं, "ग्रामेगेयम्, अरण्येगेयम्" ऐसे नामभी उनको प्रसिद्ध है इनमन्त्रों को अनेकानेक प्रकारके गायन भी हैं

कहींकहीं एकही मंत्रका ४-८-१२-१८ प्रकारतक गायन होता है-

इनका गायन ज्योतिष्टोम वगैरह विकृति यज्ञमें गानेका विधान है,

२

इन गायनोंका हजारों भेद हैं, ऐसे शौनकोक्तचरणव्यूहमें कहागयाहै "सहस्त्रवर्त्मा सामवेदो भवति. इनतीनोंवेदोंको त्रयीनामसे प्रसिद्धि है,

(घ) अथर्वसं) इसमें २ (वैदिकयज्ञोंमें इनका विनियोगका विधान है।

(५) अथर्व वेद - शौनक और पिप्पलाद" ये दो शाखाएं प्रचलित हैं उनमें शौनकशाखाका प्रारम्भ "शन्नो देवी रभिष्टये इस ऋग्वेदमंत्रसेही हुआहै, पिप्पलादशाखाका प्रारम्भ "ये त्रिषप्ताः परियन्ति" इस मंत्रसे हुआहै, इसवेदमें अथर्व ऋषिका मंत्र दर्शन ज्यादा होनेकेकारण अथर्वनामसे प्रसिद्ध है, यह ब्रह्मवेदनामसेभी प्रसिद्ध है, उसका कारण - मणिसूक्त, उच्छिष्टसूक्त, स्कम्भसूक्त, व्रात्यसूक्त, कालसूक्त, प्राणसूक्त, ब्रह्मचर्य सूक्त वगैरह ब्रह्मवस्तु के सम्बन्ध ही है,

इसवेदमें ऋग्वेदके मन्त्र लगभग २-१ हजार हैं, अलगमंत्र २ दोहजार हैं इनमें यजुरूप मंत्र भी हैं और ब्राह्मणरूप भी हैं,

इनमंत्रोंका विनियोग किसी यज्ञमें नहीं होता है, केवल अध्ययन और ज्ञानके लिएही उपयुक्त है, इनमें जो ऋग्वेदके मंत्र आये हैं उनका विनियोग उसीशाखाके ब्राह्मण कल्पसे विहित है

२

"मन्त्रब्राह्मणयो र्वेदनामधेयम"

"मंत्र और ब्राह्मण इन दोनोंको वेदनाम आया है -

"गायत्री अनुष्टुप् वगैरह छन्दोंसे बद्ध ही मन्त्र माना गया है, इन छन्दोंसे रहित केवल गद्यरूपही ब्राह्मण है, "ब्रह्मणः इदं ब्राह्मणम्" ब्रह्मयाने मन्त्र इनमन्त्रोंके सम्बन्धि होनेके कारण इन वाङ्मयोंको ब्राह्मणनाम आया है,

इस ब्राह्मणमें "ब्राह्मण - आरण्यक, और उपनिषद" ऐसे तीन विभाग हैं केवल यज्ञादि कर्मोंमें विनियोजक विधान विधायक वाक्य और मंत्रोंका अर्थ व्याख्यानरूप ही ब्राह्मण माना गया है, मुख्य प्राणादि उपासना प्रधान ही आरण्यक है, एकान्त - अरण्यमें उपासना करने योग्य होनेकेकारण आरण्यकनाम आया है, अध्यात्म अथवा तीनों तत्वों को ज्ञान प्रधान होनेके कारण "उपनिषत" नाम आया है। "उप समीपे नि षीदति" अपने पास अन्तरात्मामें रहने वाला या रखनेवाला उपनिषत् है, (उपनिषीदतीति उपसीदयति)

(१) ऋग्वेद ब्राह्मण -

(१) ऋग्वेदके ब्राह्मण - आरण्यक - और उपनिषत् ग्रन्थ

(१) ऐतरेय ब्राह्मण - "इतरनामके ऋषीके प्राप्त होनेके कारण ऐतरेयनाम आयाहै. इस ब्राह्मणमें ऋग्वेदके होता वगैरह ऋत्विजोंका यज्ञकर्ममें जो करनेका कर्तव्य बताया गयाहै, जोकि यजनमें उपयुक्त है.

(२) ऐतरेय आरण्यक - इसमें प्राणोपासनादि विधान बताये गए हैं,

(३) ऐतरेय उपनिषत् - इसमें अध्यात्म तत्त्वसे प्रधान ब्रह्मात्म वस्तुके ज्ञान प्रधान है, यह उपनिषत् - मूलतः ऐतरेय आरण्यकमें ही पठित है इस अध्यात्म तत्त्वके विशिष्ट विषयसे शंकराचार्यादि भाष्यकारोंने अलग लेलिया है: इसका अध्ययन आरण्यक ग्रन्थमें ही अभीभी कियाजाता है आगे भाष्यके अध्ययनके समयमें अलग लेते हैं, -

(४) कौषीतकि ब्राह्मण - कौ. ब्राह्मणोपनिषत् - नामसे जो प्रसिद्ध उपनिषत् है वह ऋग्वेदान्तर्गत ही है.

(५) शाङ्खायन ब्राह्मण. यहभी ऋग्वेदका ही है, येदोनो भी अभी अध्ययनमें प्रचलित नहीं हैं,

(२) कृष्णयजुः ब्रा.

(२)(१) कृष्णयजुर्वेद ब्राह्मण - तैत्तिरीय ब्राह्मण. प्रसिद्ध है, जो कि सस्वर पढाया जाता है, -

(२) कृष्णयजुर्वेद आरण्यक - यहभी प्रसिद्ध है, अध्ययनमें प्रचलित है

(३) कृष्णयजु उपनिषत् - यह आरण्यकमें ही है, इसीसे शिक्षा ब्रह्म भृगु, नारायण. चिति - ये पांच उपनिषद् रूपसे लिई गई हैं इनमें पहले तीन उपनिषदोंका भाष्य शंकराचार्यादिकोंके भाष्यके साथ है, "नारायण - और चित्ती" - इन दोनोंका भाष्य सायन और भट्ट भास्कर आचार्योंका बनाया हुआ है,

इस तैत्तिरीय शाखा की संहितामें भी ब्राह्मण भाग है. जोकि यज्ञादिकर्मके विधायक है, उसीतरह ब्राह्मणमें भी मन्त्र है. और आरण्यकमें भी है.

मूलयजुर्वेदमें तो शाक ग्रन्थ एकही है - मंत्र और ब्राह्मण विभागसे बताया गया है. उसमें एक विशेषता यह है कि ब्राह्मण भागमें ही "अनु ब्राह्मण" नामसे अलग बताया गयाहै - यज्ञादि विनियोगके विधायक वाक्यही ब्राह्मण है, और उन मन्त्रोंका अर्थ विवरण भागही अनु ब्राह्मण है यहभी मूल यजुर्वेद संहिताकी अधिकारूप वेदवेदिकामें बौधायनसूत्रके अनुसार सप्रमाणसे सिद्ध किया गयाहै.

मैत्रायणी ब्राह्मण - यह मैत्रायणी संहिता ग्रन्थमें ही हरएक प्रकरणके बाद पठितहै और मन्त्र और ब्राह्मणोंको साथही लियागयाहै.

कठशाखामें ब्राह्मणभाग अलगही लिया गयाहै.

कपिष्ठलकठ शाखाका ब्राह्मण प्रसिद्ध नहीं, उपलब्ध भी नहीं.

(७) ॥ कापिष्ठकेय मूलयजु. ब्रा.-

(९) मूलयजुर्वेद ब्राह्मण, इसमें ब्राह्मण ग्रन्थ एक ही है, इसमें एक विशेषता यह है कि - ब्राह्मण भागके साथ ही अलग अध्यायमें "अनु ब्राह्मण" नामसे विभाग कियागयाहै, और उसका लक्षण भी काण्डानुक्रमणिका - सूत्रमें तथा वार्तिकमें बतायागया है, यज्ञादिविनियोगके मंत्रोंका विधायक वाक्यही ब्राह्मण है, उस मंत्रोंका अर्थका व्याख्यान जिसमें है वह अनु ब्राह्मण है. उस अध्यायको अलगही बताया गयाहै, जोकि ब्राह्मण ग्रन्थोंमें ही अलग अध्यायके रूपसे पठित है, यह भी मूलयजुर्वेदसंहिता की वेदवेदिकामें सप्रमाण समर्थन कियागया है,

(१०) शुक्लयजु. ब्रा.

(१०) शुक्लयजुर्वेद ब्राह्मण - इसमें शतपथ ब्राह्मण एक ही है, उसीमें आरण्यक - और उपनिषद् भागभी पठित है, अतः उसका नाम भी - "बृहदारण्यकोपनिषत्" रखा गयाहै। यह शतपथ ब्राह्मण के अन्तर्गतही है वाजसनेय माध्यन्दिन काण्व, इन शाखाके शतपथ नामका ब्राह्मण कुछ पाठभेद से पठित है, इसमें एक विशेषता यह है कि - ऐतरेय वगैरह ब्राह्मणोंमें स्वरनहीं है तैत्तिरीयमें स्वर है, कठसंहिताके मंत्रमें - सबही अनुदात्त स्वर एकही है उसीतरह इसशतपथ ब्राह्मण सबही अनुदात्त एकही स्वरसे पढा जाता है,

(११) सामवेद ब्रा.

(११) सामवेद ब्राह्मण - इसमें ताण्ड्य ब्राह्मण प्रधान है और भी अष्ट ~~सात~~ ब्राह्मण ग्रन्थ मौजूद है, इसीमें ~~उपनिषद्~~ आरण्यक, और उपनिषद् भी आये है, यह बहुतही बड़ा विस्तृत है, -

(१२) अथर्व. ब्रा.

(१२) अथर्ववेद ब्राह्मण - इसमें अनेक ब्राह्मण ग्रन्थ हैं, उसीमें (तवल्कारोपनिषद्, केनोपनिषद्, प्रश्नोपनिषत्, मुण्डकोपनिषत् माण्डूक्योपनिषत्, वगैरह प्रसिद्ध है इनका भाष्यभी ईशोपनिषदोंके अन्दर शंकराचार्य वगैरह आचार्योंका बनाया हुआ प्रसिद्ध है इसीतरह "गणपति अथर्वशीर्षोपनिषत्-नामसे प्रसिद्ध है इन सभी उपनिषदों को "वेदशिरस्" मानागयाहै वेदोंका अध्यात्मतत्वोंसे श्रेष्ठ होनेके कारण शीर्ष नाम आया है " सर्वस्यगात्रस्य शिरः प्रधानम् " सभी शरीर और इन्द्रियों का शिरःही प्रधान है।

~~१२~~ (१३) वेदोपनिषत् ("एषा वेदोपनिषत्" (तै. शिक्षोप.)

१३ यहांपर यही एक विशिष्ट तात्त्विक अर्थका शब्द है. जोकि वेद और उपनिषत् इनदोनों शब्दोंका योग एक ही शब्द में हुआ है। इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि - मन्त्रों में ही - यह उपनिषत् - गुप्त है, गुप्त रूप से समर्थित है. जोकि अध्यात्मतत्त्वका विशिष्ट वर्णन और अर्थ सह दोनों भी - सम्मिलित है, यह बात वेदोंमें और उपनिषदोंमें जगह जगह पर गुप्तरूपसे छिपाहुआ है - उसीका प्रकाशन यहां वेदोपनिषत् प्रकरणमें कियाजाता है.

।।शिक्षा वगैरह छः वेदाङ्ग ग्रन्थ

इन वेदांगोके ज्ञानके बिना मूलवेदका यथार्थ ज्ञान नहीं होसकताहै
उसीतरह केवल वेदाङ्गोंके ~~अध्ययन और ज्ञानसे~~ मूलभूत वेदको छोडके
केवल अंगोंके ज्ञानसे भी कुछ सच्चा ज्ञान भी नही हो सकताहै कुछ
लाभ नही है, जैसेकि हमारे शरीरेन्द्रियोंके योगके बिना केवल अन्तर आत्मावस्तुका
कोई व्यवहार नही हो सकता है. और मूल चेतन आत्माको छोडके केवल जड़
अचेतन शरीरेन्द्रियोंसे ही कुछभी नही चल सकताहै संसार-प्रपञ्च और परमार्थ
इन सबोंमे आत्मा और इन्द्रियोंका योगही मूल आश्रय है उसीतरह वेद और
वेदांगोके बारेमें भी सब समान है. इसीलिए यहां वेदांगोका भी समर्थन -
इस वैदिक विद्याके अन्दर ही लियागयाहै।

(१) वेदाङ्ग शिक्षा-

१४ (१४) (१) शिक्षा - वेदाङ्ग शिक्षा - यह पाणिनि मुनिकी बनाई हुई है
इसमें वेदोंका वर्ण स्वर वगैरहका उच्चारकी विधि बताई गई है।
यह मूलतः तैत्तिरीय शिक्षा उपनिषत्‌सेही लिया गयाहै-
"शिक्षां व्याख्यास्यामः। वर्णः स्वरः। मात्रा बलम्। साम सन्तानः। इत्युक्तः
शिक्षाध्यायः" इसमें वर्ण वगैरह छः विषय ही प्रधान मानेगए हैं,
यह वेदका घ्राणेन्द्रिय स्वर माना गयाहै "शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य" इति।।

(२) वेदांग कल्पः

(१५) (२) कल्पः - कल्पसूत्रकेनामसे प्रसिद्ध है, उसमेंभी "श्रौतकल्प और
स्मार्तकल्प, उसमें श्रौतादि यज्ञोंका विधान जिसमें है वह श्रौतकल्पहै,
और गृह्यकर्म- उपनयनादि (अग्निहोत्रादि) संस्कारोंका जिसमें विधिहैं वह स्मार्तकल्पहै,
इसको गृह्यसूत्र नामभी प्रसिद्ध है.
ऋग्वेदमें आश्वलायनका बनाया हुआ गृह्यसूत्र है और परिशिष्टभी है. उसीतरह
सभी वेदोंके शाखाओंमें अलग अलग श्रौत, और गृह्य सूत्र मौजूद है. उनके
आचार्यलोग भी अनेक है.
यह कल्प वेदोंका हाथ मानागयाहै। क्योंकि हाथसेही सब काम किए जाते हैं।
"हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते" पा. शिक्षा

(३) वेदांग व्या.

१६ (१६) (३) व्याकरण, इसमें "अइउण्। ऋलृक्" वगैरह चौदह १४ सूत्र हैं, इसको
अक्षर समाम्नाय कहते है, "येनाक्षर समाम्नायमधिगम्य महेश्वरात्। कृत्स्नं
व्याकरणं प्रोक्तं तस्मै पाणिनये नमः।। ~~इस अक्षर से~~ "समाम्नाय माने वेदकानाम है,
इस समाम्नायमें ४२ अक्षर है उन्हीको सैशोधनसे पाणिनिने ६४ वर्णोंका
समर्थन किया है. त्रिषष्टिश्चतुःषष्टिर्वा वर्णाः शम्भुमते मताः। प्राकृते संस्कृते
चापि स्वयंप्रोक्ताः स्वयम्भुवा। शम्भुके मतमें ६४ वर्ण अभिमत हैं ये सभी प्राकृतभाषाओंमें
और संस्कृतभाषामें भी ओतप्रोत भरा है, ऐसे स्वयम्भु ब्रह्माने कहा है।।
इस व्याकरणमें शब्द और धातुकी व्युत्पत्ति बताई गई है
इसीतरह "सारस्वत व्याकरण" भी प्रसिद्ध है.
यह वेदका मुख मानागया है क्योंकि - मुखसेही वर्णोंका उच्चार होता है.
"मुखं व्याकरणं स्मृतम्" पा. शिक्षा (प्रतिशाख्य)

वेदांग-

## (४) निरुक्त

१७ (४) निरुक्तम्- यह वैदिक निघण्टु कोषका भाष्य है. यास्काचार्यजी का बनाया हुआ है, इसमें वैदिक शब्दोंके अर्थकी निर्वचन पद्धतिका विवरण है; इसमें निरुक्तकाण्ड, नैगमकाण्ड, दैवतकाण्ड, और परिशिष्ट ऐसे ५ प्रकरण है,

इसीतरह शाकपूणि, काशकृत्स्न वगैरह आचार्योंके निरुक्त भी प्रसिद्ध है. जिनका नाम इसी निरुक्तमें अनेक जगह पर बताया गया है.

वेदके यह अर्थज्ञानमें साधन होनेके कारण इसको वेदका श्रोत्रेन्द्रिय माना गया है,। "निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते (पा. शिक्षा)

## (५) वेदांग छन्दः।

(१८) (५) छन्दः - इसमें वेदमंत्रोंके गायत्री वगैरह छन्दोंका लक्षण, बताया गया है,

१८ यह पिङ्गलनागका बनाया हुआ है, इसमें संस्कृत भाषाके इतर छन्दोंका भी समर्थन किया गया है, यह वेदोंका पाद माना गया है

"छन्दः पादौ तु वेदस्य" (पा. शिक्षा)

## (६) वेदाङ्ग ज्योतिषम्-

१९ (६) ज्योतिषम्- यह लगधनामके मुनिका बनाया हुआ है।
इसमें दिन-ऋतु-मास-पक्ष-तिथि-अयन-संवत्सर और युगके भी कालोंके ज्ञानके लिए अनेक विचार किया गया है, यह वैदिक यज्ञके लिए तथा उपनयनादि संस्कारके लिए आवश्यक है, और विशेष उपयुक्त भी है,

इसमें आर्च ज्यौतिष, और याजुष ज्यौतिष ऐसे दो प्रकार है,
यह वेदोंका नेत्र माना गया है। क्योंकि ज्योतिका दर्शन नेत्र से ही होता है.
"ज्योतिषामयनं चक्षुः" पा. शिक्षा इसप्रकार वेदोंका ये छः अङ्गोंका स्वरूप है

इसको मुण्डकोपनिषत्में अपरा विद्या का स्वरूप माना गया है,
और इनके तत्त्वार्थ ज्ञानरूप ही परा विद्या है, "ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः- द्वे विद्ये वेदितव्ये परा चैवापरा च तत्रापरा, शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति" ~~इसे~~ यह अपरा विद्या दिखाई गई है

२० "अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते" जिस विद्या से वह परवस्तु पाया जाता है
२१ वह पराविद्या है.
यही शब्दविद्या अविद्या भी मानी गई है। इन दोनोंके सहयोगसे ही पूर्णज्ञानका फलका अमृतत्व प्राप्त होता है "विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह। अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते" ईशावास्योप.

वेदों के छः ६ उपाङ्ग भी हैं, जो कि षड्दर्शनशास्त्र के नामसे प्रसिद्ध हैं,

(१) ~~उपाङ्ग~~ धर्ममीमांसाशास्त्र

(२१) (१) धर्ममीमांसा शास्त्र - पहला है, यह जैमिनि आचार्यका बनाया हुआ है, " अथातो धर्मजिज्ञासा " (जै. सू. १।१।१) यहां पर अथ शब्दका अर्थ - " वेदाध्ययनानन्तरम् " माने वेदाध्ययनके बाद ऐसाही किया गया है,

इसमें १२ बारह अध्याय हैं, और १००० एक हजार अधिकरण हैं, इसका भाष्य शबरस्वामीने बनाया हुआ है, और कुमारिल भट्ट का तन्त्रवार्तिक है। यह अनुष्टुप् श्लोकोंसे विरचित है, सायन माधवाचार्य की जैमिनीय न्यायमाला भी है प्रसिद्ध है। इस मीमांसामें वैदिक यज्ञादि कर्मानुष्ठानके बारेमें अनेक विचारोंका और कृतियोंकी चर्चासे सप्रमाण निर्णय किया गया है।

२

(२) ~~ब्रह्म~~ ब्रह्ममीमांसाशास्त्र ॥

२

२२ (~~२१~~) (२) ब्रह्ममीमांसा शास्त्र - " अथातो ब्रह्मजिज्ञासा " (ब्र. सू. १।१।१)

इसमें परब्रह्म वस्तुके ज्ञान और विज्ञानके ~~बारेमें~~ लिए उसका स्वरूपनिमित्त और फलोंका विशिष्ट विमर्श किया गया है। यह दस - ग्यारह उपनिषदोंका सारभूत तत्त्वोंका विमर्शात्मक शास्त्र है, ~~इसके श्रीशङ्कराचार्यजी का~~

इसमें ४-४ पादोंके ४ अध्याय हैं, उनमें अनेक अधिकरण हैं (अधि. संख्या. )

इसके श्रीशङ्कराचार्यजीका शारीरक भाष्य प्रसिद्ध है, जो अद्वैतसिद्धान्तका बोधक है। श्रीरामानुजाचार्जीका श्रीभाष्य है जो शक्तिविशिष्टाद्वैत माना गया है। श्री वल्लभाचार्यजीका भाष्य शुद्धाद्वैतका है। श्रीकण्ठभाष्य शिवाद्वैतका है। श्री मध्वाचार्यजीका पूर्णप्रज्ञ भाष्य है द्वैतसिद्धान्तका बोधक है।

२

२३ (३) योगदर्शन ॥

~~२२~~ (३) योगसूत्र - " अथ योगानुशासनम् " (यो. सू. १।१।१)

यह पतञ्जलि का बनाया हुआ है, इसमें चित्तवृत्तिका निरोध का निरोधरूपयोगमें अभ्यासवैराग्य रूप साधन- और आत्मस्वरूपस्थितिरूप फल, ये दोनों प्राधान्यसे उपदिष्ट हैं। आगे अष्टाङ्गयोग है। इसमें धारणा ध्यान और समाधिका तथा इन तीनोंके सामरस्यसे संयमयोग बताया गया है। फलमें - सम्प्रज्ञात समाधि और असम्प्रज्ञात समाधि रूपसे आत्मनिष्ठाका उपदेश किया गया है। इसमें १ अध्याय और ४ पाद हैं॥

२

~~२३~~ (४) साङ्ख्यदर्शन

२४ (४) साङ्ख्यसूत्र - " "

यह कपिल मुनिका बनाया हुआ है, यह सूत्ररूप है। साङ्ख्यकारिका - श्लोकबद्ध है। इसमें प्रकृति और पुरुष का तत्त्व ज्ञान बताया गया है। प्रकृति विश्वरूप है। पुरुष केवल चेतनात्मक है, उस परोक्षसिद्ध वस्तुरूप चेतनासे विश्वरूप प्रकृतिकी प्रवृत्ति स्थिति और निवृत्ति भी होती है, पुरुष तो इन सभी विषयोंसे निर्लिप्त है, इत्यादि

२

८

(५) वैशेषिक दर्शन

सूत्र — "अथातो धर्मं व्याख्यास्यामः" (१।१।१)

२५ (५) वैशेषिक दर्शन - यह कणाद मुनिका बनाया हुआ है,
यह सप्तपदार्थ वादी है, वेदवचनको प्रमाण मानते हैं,
"द्रव्य गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय- और अभाव ये सात पदार्थ माने गए हैं,
इसका भाष्य - आचार्यजीका बनाया हुआ है माना गया है।
यह अर्थ विचारके बारे में बड़ा उपकार देने लायक ही है। व्याकरणकी तरह इसमानही
"काणादं पाणिनीयंच सर्वशास्त्रोपकारकम्"

(६) न्यायदर्शन

२६ (६) न्यायसूत्र - "प्रमाणप्रमेय० (१६ पदार्थ हैं,)
यह गौतम मुनिका बनाया हुआ है, वह षोडश पदार्थ वादी है,
इसका भाष्य वात्स्यायन मुनिका बनाया हुआ है। यह शब्द प्रमाणवादी है।
आप्तवाक्य ही शब्दका स्वरूप है,
इसमें "प्राचीनन्याय, नवीनन्याय" ऐसे दो प्रकार है, नवीनन्यायका श्लोक ग्रन्थ वार्तिक है,
उसकी टीका वाचस्पति मिश्रकी बनाई हुई है,
इस न्यायमें - गादाधरी और जागदीशी ऐसी दो शाखाएं भी है, दक्षिणमें गादाधरी
उत्तरमें जागदीशी है। प्रचलित है।

इन षड् दर्शनोंके अलावा और एक दर्शनग्रन्थ भी प्रसिद्ध है-

(७) सिद्धान्त दर्शन

(७) "सर्वत्र अनाश्वासः" - (सि. द. सू. १।१।१)

यह षड् दर्शन में अन्तर्गत शास्त्र ही है। सातवां ग्रंथ होने पर भी अलग नहीं है,

॥ धर्मशास्त्र ॥

२७ धर्मशास्त्र - यह स्मृतिग्रन्थ है श्रुतिके बाद दूसरा स्थान इसीका है,
२८ "श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः" (मनु. स्मृ. )
(तथा २८)

यह मनु याज्ञवल्क्य पराशर आदि मुनियों के मतानुसार बहुत विस्तृत रूपसे २०-२४ स्मृतियों के मुखसे फैला हुआ है, इनमें वेदप्रमाणके अनुसार उपनयनादि संस्कार और वर्णाश्रमादिधर्म वगैरह विषय विस्तृतरूपसे समर्थित है।

इस धर्मशास्त्र की नाम परिगणना (१४) वैदिक प्रमाण ग्रन्थोंके अन्दर आई है-
"पुराणन्यायमीमांसा धर्मशास्त्राङ्गमिश्रिताः। वेदाः स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश॥
पुराण-न्याय-मीमांसा-धर्मशास्त्र, और ६ वेदाङ्ग- ४ चार वेद ये सब मिलके विद्याज्ञान और धर्म के भी १४ चौदह प्रमाण स्थान हैं, यहाँ यहाँ पर विशेष जानने लायक है,

## (४) उपवेद

ऋग्वेदादि चारों वेदों के चार उपवेद भी प्रसिद्ध हैं।

### (१) आयुर्वेद

२८
~~५५~~ ~~२८~~ (१) ऋग्वेद का उपवेद - आयुर्वेद है। इसमें चरकसंहिता, सुश्रुतसंहिता,
~~२७~~ २६ अष्टाङ्गहृदय" ऐसे तीन ग्रन्थ प्रधान हैं। इनमें मानवों के आयु-आरोग्य, बल, प्रज्ञा-मन्त्रज्ञान की वृद्धि वगैरह उनके शारीरिक और आध्यात्मिक सम्पत्तियों की प्राप्ति के लिए अनेक औषधियाँ और चिकित्सा-तथा प्रत्यक्ष प्रक्रिया रूप से साधनों का प्रकार भी उपदिष्ट है। उसमें भी आहार विहारादि नियम भी निर्दिष्ट है जो कि सत्त्वशुद्धि और ध्रुवास्मृति के प्रधान कारण उपनिषदों में माना गया है।

### (२) धनुर्वेद

२७ (२) यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद है। यह धनुर्विद्या नाम से प्रसिद्ध है, जो कि
~~२९~~ क्षत्रियों के लिए प्रधान विद्या मानी गई है, और विश्वविजय का प्रधान साधन भी है।
२८ जिस धनुर्विद्या को परशुराम ने दत्तात्रेय से प्राप्त कर ली थी, परशुराम से
~~२६~~ २९ भीष्म द्रोण, कर्ण वगैरह क्षत्रियों ने प्राप्त कर लिया था। भीष्म से नरवीर अर्जुन ने पाया था, जिससे महाभारत के युद्ध में विजय पाया था ऐसे सुनने में आता है। उससे भी पूर्व युग में श्रीरामचन्द्रजी ने विश्वामित्र से सीख ली थी। जिससे शिवधनु को नमाकर सीता शक्ति को पाया था, बाद परशुराम के धर्षण से 'विजयी बनकर' "रामः शस्त्रभृतां वरः" ऐसी पदवी पाई थी। बाद दशमुख रावण का भी जिस धनुर्विद्या से विजय पाई थी, और रामराज्य की प्रतिष्ठा की थी,

वह धनुर्विद्या- मन्त्रसाचिव्य रूप से सिद्ध की हुई थी जो कि वैदिक सिद्धान्त के अनुसार क्रतु और दक्षरूप ज्ञान और क्रिया शक्ति के योग से मित्रावरुण देवता के सत्त्व से सिद्ध हुई थी ब्रह्म क्षत्र तेजोरूप की थी- ज्ञान और क्रिया शक्तिरूप भी थी,

उसी तरह योगविद्या से आँखें और बाया (दक्षि) दाहिना और बायें हाथ - वगैरह से युक्त शाम्भवी मुद्रारूप से सिद्ध हुई थी।

उस धनुर्विद्या का ग्रन्थ भी प्रसिद्ध ही है।

### (३) गान्धर्व वेद

~~२८~~
~~२९~~ (३) सामवेद का उपवेद गान्धर्व वेद। जिसमें सामगान का विधि और विधान है, यही सङ्गीत विद्या है
~~३०~~ ~~२९~~ वस्तुतः यह ऋग्वेद मन्त्रों से संबद्ध है। (पतङ्गो वाचं मनसा बिभर्ति तां गन्धर्वोऽवदद्गर्भे अन्तः।
३० "गन्धर्वो नाम निहितं गुहासु" (ना.उ.१७)" प्राणा वै गयाः तद् इमाः त्रात्रे तस्माद् गायत्री' इत्यादि वचनों से यह गान्धर्व विद्या प्राण से सम्बद्ध है ऐसा सिद्ध होता है। वह भी- तस्मादृच्यध्यूढं साम गीयते" इस वचन के अनुसार ऋङ्मन्त्र से ही सामगायन किया जाता है, वह भी प्राण के स्वर से ही सम्बद्ध है। उसमें भी "शक्वर रैवत, राजन, बृहत, वगैरह सात प्रकार भी हैं और उद्गीथ विधादि रूप भी है। विकृति यज्ञों में भी इसका विधान है।

इसी तरह लौकिक संगीत विद्या में भी इसका सम्बन्ध है। वहाँ षड्ज-ऋषभ गान्धार मध्यम पञ्चम धैवत निषादाः ऐसे सात स्वरों का समर्थन किया गया है, वहाँ ये नाम भी उन स्वरों का साङ्केतिक ही है, यह भी समुद्र की तरह बहुत ही विस्तृत रूप से फैली हुई है।

(४) आगम-तन्त्र ॥

अथर्ववेदका उपवेद प्रसिद्ध है

३१ (४) आगम-और तन्त्र शास्त्र यही ~~अर्थ~~

३१ उसमें वैखानस आगम, पाञ्चरात्र, शैवागम, शाक्तागम, ऐसे अनेक ग्रन्थ है,
जिनग्रन्थोंमें देवताओंकी प्रतिष्ठा, प्राण प्रतिष्ठा, पूजाविधि, महोत्सव वगैरह
आराधनाओंकी विधिकी प्रक्रिया विहित है.
उसीतरह तन्त्रशास्त्रमें "मेरुतन्त्र, वामकेश्वर तन्त्र, ज्ञानार्णव तन्त्र, शिवतांडवतंत्र,
भैरवतन्त्र, शाक्त तन्त्र, दुर्गातन्त्र, वगैरह अनेक ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं,
उनमें तांत्रिक पौराणिक सभी देवताओंके मन्त्र-यन्त्र और तन्त्रोंका विधान है,
उसमें शक्तिदेवतामें "दशमहाविद्या" नामसे प्रसिद्ध दस शक्तिदेवताएं हैं, और
उनके मंत्र भी है उनके जप पुरश्चरण हवन तर्पण वगैरह विधानभी है,
यहां भी अनेक प्रकारके फलोंके उद्देशसे भिन्न भिन्न प्रकारकी उपासनाभी विहित है;

॥ इतिहास ॥

३२ "इतिहास" इतिह आस" ऐसा था ऐ इसप्रकारसे जो केवल परोक्षरूपसे सुननेमें आताहै
३२ उसीको इतिहास कहते हैं, इसको पूर्वमीमांसामें और तैत्तिरीय आरण्यकमें भी एक
प्रमाणके रूपसे सुनाया गयाहै." श्रुतिः प्रत्यक्षमैतिह्यम्, अनुमानश्चतुष्टयम् "इति-
"श्रुति-प्रत्यक्ष ऐतिह्य और अनुमान ये चार प्रमाण हैं.
पूर्वमीमांसामें इसके बारेमें दृष्टान्त भी दिया गया है, "इह वृक्षे यक्षोऽस्तीति"
इस वटवृक्षमें यक्ष है ऐसे प्राचीन कालसे हमारे पुराने लोग कहते आये हैं,
उसके अनुसार वेदमें गुप्त अर्थोंके सांकेतिक रूपसे छिपे हुए अर्थोंको बतानेके लिए
रूपकके स्वरूपसे जो लिखा गया है वही इतिहास माना गया है,
उसमें व्यासकृत महाभारत सुप्रसिद्ध है जोकि एक लाखश्लोकका एक बड़ा भारी ग्रन्थ है
इसको पांचवा वेद मानते हैं "भारतः पञ्चमो वेदः"
उसमें १८ अठारा पर्व भी अलग अलग हैं,

॥ वैदिक इतिहास ॥

३३ वेदमन्त्रोंमें ही छिपे हुए तत्त्वज्ञानको समझानेके लिए रूपकके स्वरूपसे कहानीकीतरह
कथाकी कल्पनासे जो बताया जाता है वह इतिहास है.
"मधुविद्या" जैसेकि मधुविद्या बृहदारण्यक उपनिषत्में बताईगई है।
उसका मूल प्रमाण ऋग्वेदके दो मंत्रोंमें ही हैं उसका प्रमाण उदाहरणके लिए यहीं बताते हैं,
"तद् वां नरा सनये दंस उग्रम्- आथर्वणायाश्विना दधीचे" इत्यादि,
उसीतरह, "अपाला ब्रह्मवादिनी, घोषा वगैरह अनेक सूक्तोंमें भी छिपा हुआ
इतिहास तत्त्वज्ञानका रूपक रचना कहीं है.

॥ पुराण ॥

३४ पुराण भी एक प्रमाण ग्रन्थ हैं यह वैदिक तत्त्वोंको उपबृंहणात्मक है-
इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्॥
व्यासकृत प्रत्यक्षग्रन्थरूप पुराण अठारा है "अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्.
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्" यह वैदिके परिशिष्ट मंत्रसे ही लिया गया है
"येन केन प्रकारेण कोऽपि नाम न जीवति। परेषामुपकारार्थं यज्जीवति स जीवति॥" इति

इति- देवरातः